सं० घो०वि०/ग्रम्वा०/87-86/42805.—चूंकि हूरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० ग्रोपटीलेव इन्जीनियर्ज जगाधरी रोड़, ग्रम्बाला छावनी, के श्रमिक श्री सुन्नील कुमार शर्मा, मार्फत श्री इन्द्रसैन बंगल छता नालागिंदया जगाधरी (ग्रम्बाला) तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल दिवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं०-3(44) 84-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रेल, 1984 द्वारा उक्त श्रिधसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री सुशील कुमार शर्मा की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो० वि० |सोनीपत| 33-86 | 42811. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० रबड़ रिकलेंम कम्पनी ग्राफ इण्डिया प्रा० लि०, वहालगढ़, सोनीपत, के श्रमिक श्री भगवती प्रसाद, टोकन नं० 779 मार्फत केमीकत वर्करज यूनियन, (सीटू), सोनीपत तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौडोगिक विवाद है;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गर्ड मिन्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित मरकारी अधिसूचना की बादा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री भगवती प्रसाद, टोकन नं० 779 की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ओ विवसो सिन्त / 32-86 / 42818 .-- चुंकि हरियाणा के राज्यताल की राये है कि मैं वर्षड़ रिकलेम कम्पनी ग्रां इंग्डिंग प्राव्य कि वहा काइ, सो से राज्ये के श्रीकृष्ट श्री हिंदि सिंह मार्फत के मी कल वर्षरज यूनियन (सीटू), सोनीपत तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इस रे बाद लिखित मामले में कोई ग्रीहोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इहिलिये, अब, बौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शॉक्तपों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यनाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 9641−1−श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गेठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अबीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवाद प्रस्त या उसके सुसंगत या उसके सम्बन्धित नीचे मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विदाद से सुसंगत अधित सामला है :—

क्या श्री हरि रिह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 5 नवंस्वर, 1986

सं० श्रो० वि०/एफ०डी०/86-86/41441.—चू कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० फरीदाबाद भाटो इण्डस्ट्रीज प्रा० लि०, प्लाट नं० 63, सैक्टर 6, फरीदाबाद के श्रीमक श्री जय भगवान, पुत श्री हर नारायण सिंह, मांफत श्री एच० एल० रंगा मकान नं० 137-बी लक्ष्मी गार्डन गुड़गांव तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चू कि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रव, श्रीद्योगिक विज्ञाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7क के श्रधीन गठित

¥

योद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, परीदावाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों स्था श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामलां है न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते है:---

क्या श्री जय भगवान की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं ० श्रो०वि०/एप.०डी०/91-86/41448.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० इम्प्रेंग्स एण्ड इन्सुलेशन कारपोरेंशन, 19/6, मथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री श्रीराम दहिया, पुत्र श्री कंनी राम, गांव गैलपुर, पलवल, जिला फरीदाबाद, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखिल मामले में कोई श्रीग्रोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिविनेंगम, 1947, की बारा 10 की उपबारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा श्रदान की गई शिवतयों का श्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यकाल इसके द्वारा उक्त श्रविनियम की धारा 7क के श्रवीन गृद्धित श्रीद्योगिक श्रविकरण हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है, न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:---

क्या श्री श्रीराम दहिया की सेवाग्रों का समापन न्या<mark>योचित तथा ठीक है ? बदि नहीं, तो वह किस राहत का</mark> हकदार है ?

सं म्रो. वि. /एफ०डी०/176-86/41455.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० म्रपोलो रवड़ श्रावट, 15/1, मथुरा रोड, फरीवाबाद, के श्रमिक श्रीमती उमिला देवी, पत्नी केंदार नाथ शिवपुरी कालोनी झुगी नं० 36 तजदीक बड़खल मोड़ फरीवाबाद, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई भ्रोद्योगिक विवाद है;

श्रौर चंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिवित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियागा के राज्यसल इनके द्वारा उन्त प्रवित्यम की धारा 7क के अक्षीन गठित श्रौद्योगिक श्रिविकरण, हरियाणा फरोदाबाद को ती वे विविद्यान को कि उन्त प्रवन्त्रकों तथा अपिक के बीच या तो विवादशस्त मामजा है अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है त्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हैतु निर्दिष्ट करते है :---

क्या श्रीमती उर्मिला देवी की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है? 😁

सं० ग्रो० वि०/एफ०डी ०/28-86/41462 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० मैनेजिंग डायरेक्टर, हरियाणा राज्ये एम० ग्राई० टी० सी० चण्डीगढ़, (2) कार्यकारी ग्रिभियन्ता, ग्राग्० मण्डल नं० 1 एम० ग्राई० टी० सी०, फरीदाबाद, के श्रीमिक श्री सज्जय सिंह, पुत्र श्री मेला राम मार्फत श्री प्रदीप शर्मा, 39, निशान हट एन० एच० फरीदाबाद, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विदाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, भीद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपद्वारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रटान की गई किन्हियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त भिविषम की द्वारा २क के भवीन गठित भीद्योगिक अधिकरण, हरियाणा फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है भयवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्यायनिणय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री सज्जन सिंह, की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 12 नवम्बर, 1986

सं ग्रो विव | 31-85/42825. -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं रबड़ रिकलेंम कम्पनी ग्राफ इण्डिया, प्राo लिंग, बहालगढ़, सोनीपत के श्रमिक श्री श्री राम मार्फत कैमिकल वर्करण यूनियन (सीटू), सोनीपत तथा उसके प्र बन्धकों के बीच इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है; भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिघिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उस्त प्रवत्वकों तथा श्रीमिक के बोच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री श्री राम की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

' सं ग्रो॰ वि॰ ग्रम्बाला/83-86/42832.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ भूपिन्द्रा सिमेन्ट वर्कस, सुरजपुर (ग्रम्बाला) के श्रमिक श्री बालक राम, पुत्र श्री मिन्शी राम, गांव राजीपुर, 'ड़ा॰ बी. सी. डब्ल्यु., सुरजपुर (ग्रम्बाला), तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, अौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गावितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणों के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गटित श्रम न्यायालय, अम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

बया श्री बालक राम, पुत श्री मिन्शी राम, की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

[सं ग्री वि. ग्रम्बाला/85-86/42839--चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं भूपिन्द्रा सीमेन्ट वर्कस, सुरजपुर (ग्रम्बाला) के श्रम्कि श्री राज वृमार, पुत्र रदर्शीय श्री सीता राम, गांव राजीपुर, विवाद है ; स्वाला के स्थाद समें इस के बाद लिखित मामले में कोई ग्री द्योगिक विवाद है ;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय है हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिनूचना सं १(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गटित श्रम त्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेत् निर्दिट करते हैं जो कि उन्त | प्रवन्धकों तथा श्रिक के बीच या तो विवादग्रत मामला है या विवाद से सिसंगत ग्रथवा सिबंधित मामला है:—

क्या श्री राजकुमार, पूत श्री स्वर्गीय सीता राम की सेवाशों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ?यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि | 84-86/42846. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की हिराय है कि । मैं भूषित्वा सीमैन्ट वर्जस, सुरजपुर (ग्रम्बाला) है कि अमिक श्री हिरपाल है सिंह, पुन्न मस्त राम, गांव लोहगढ़, डा० वासोल वाया पिजोर (ग्रम्बाला) तया उसके प्रवत्वकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्री होगिक विवाद है;

अप्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा स्रकारी अधिसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गटित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा

मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री हरपाल सिंह, पुत्र श्री मस्त राम की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

> न्नार० एस० भ्रग्रवाल, उप सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग।

•दिनांक 7 नवस्वर, 1986

सं. यो. वि./एफ.डी/144-86/41860-चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं इण्डियन हार्डवियर इण्डस्ट्रीज लिं हार्डवियर चौक एन. ग्राई टी., फरीदाबाद के महासचिव इण्डियन हार्डवियर इण्डस्ट्रीज वर्करज यूनियन 1-ए/119, एन. ग्राई टी., फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें के सम्बन्ध में कोई ग्रीदोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को त्यायनिर्णय हेत् निविष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अा, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारी 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुने हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7क के अधीन गठित सौद्योगिक अधि-करण, हिरियाणा, फरीदाब द को नीचे विनिद्धित्व मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामले हैं अथवा विवाद से मुसंगत या संबंधित मामले हैं। न्यायनिर्णय एवं पंचाद छः मास में देने हेतु निर्दिण्ड करते हैं:—

- (i) क्या संस्था के सभी कामगार वर्ष 1985-86 का बोनस 20 प्रतिशत के हिसाव से लेने के हकदार बनतें हैं? यदि नहीं, तो कितने प्रतिशत बोनस के हकदार बनतें हैं और किस विवरण में ?
- (2) क्या रात की शिषट में काम करने वाले कामगारों को रात भक्ता मिलना चाहिये? यदि हां, तो कामगार किस राहत के हकदार हैं?

कुलबन्त सिंह, वित्तायुक्त एवं सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम तथा रोजगार विभाग ।